Q. नेपोलियन बोनापार्ट के पतन के कारणों पर प्रकाश डालें ?

Ans:- इतिहास साक्षी है कि प्रत्येक साम्राज्य अथवा सम्राट का चाहे वह कितना ही शक्तिशाली क्यों न हो एक निश्चित अवधि के पश्चात् पतन होने लगता है। नेपोलियन भी ~~एक~~ इस ऐतिहासिक सत्य का अपवाद न था। 'असम्भव' शब्द को न मानने वाला नेपोलियन भी अन्ततोगत्वा पतन के गर्भ में समा गया। नेपोलियन के पतन में अनेक प्रत्यक्ष कारणों ने सहयोग दिया, जिनमें से प्रमुख निम्नलिखित थे —

1. एक व्यक्ति की योग्यता पर आधारित राज्य - नेपोलियन अपनी योग्यता के आधार पर शासक बना था। इसमें कोई सन्देह नहीं है कि नेपोलियन प्रतिभा का स्वामी था, किन्तु फिर भी राज्य को सुचारु रूप से चलाने के लिए परामर्शदाताओं की आवश्यकता होती है। नेपोलियन किसी भी प्रकार के हस्तक्षेप को पसन्द नहीं करता था और न ही किसी भी प्रकार के हस्तक्षेप को पसन्द नहीं करता था और न ही किसी से परामर्श लेता था। यहाँ तक तालीरां के फूशे जैसे योग्य व्यक्तियों से परामर्श लेना भी उसने छोड़ दिया। नेपोलियन यह भूल गया था कि वह ईश्वर नहीं वरन् एक मनुष्य है और मनुष्य की क्षमताएं सीमित होती हैं, चाहे वह कितना भी योग्य क्यों न हो।

2. असीमित महत्वाकांक्षी होना - उन्नति करने के लिए मनुष्य का महत्वाकांक्षी होना आवश्यक है किन्तु जब महत्वाकांक्षाएं मनुष्य की क्षमता से अधिक होने लगती हैं तो उसका पतन होना लगता है। नेपोलियन के साथ भी यही हुआ था। नेपोलियन के पतन के लिए अन्य बाहरी कारणों से अधिक

उसकी भी प्राकृतिक बाधा को स्वीकार करने के लिए तैयार न था। वह एक साधारण सिपाही से फ्रांस का सम्राट बन गया था, किन्तु फिर भी उसकी अभिलाषाएं समाप्त न हुईं। फ्रांस का सम्राट बनने के पश्चात् वह विश्व विजय का स्वप्न देखने लगा। यही उसके पतन का कारण बन गया क्योंकि यूरोप के राष्ट्रों ने उसके विरुद्ध संगठन कर उसके पतन के बीज बो दिए।

3. नेपोलियन का खराब स्वास्थ्य - बढ़ती आयु के साथ-साथ नेपोलियन का स्वास्थ्य भी खराब होने लगा था। यद्यपि रोज इत्यादि कुछ इतिहासकारों का मानना था कि वाटरलू के युद्ध के समय नेपोलियन पूर्णतया स्वस्थ था। केवल उसकी निर्णय शक्ति कमजोर हो गई थी, किन्तु इस बात को स्वीकार करना कठिन है। रूस के अभियान के पश्चात् उसका स्वास्थ्य गिरा था, इसके अतिरिक्त यदि रोज की बात को भी मानें तो यदि सम्राट की निर्णय शक्ति ही कमजोर हो जाएगी तो उसका पतन होना स्वाभाविक ही है। सम्भवतः इसी कारण उसने लिपजिग व वाटरलू के युद्ध में अनेक भूलें कीं। डॉ. स्लोन ने लिखा है, "नेपोलियन के पतन के समस्त कारण एक शब्द 'थकान' में निहित हैं।" निःसंदेह, निरन्तर युद्धों में रत रहने से नेपोलियन थक चुका होगा, जिससे उसकी कार्यक्षमता व युद्ध क्षमता पर असर हुआ।

4. सैनिकवादी नीति - नेपोलियन ने अपने जीवनकाल में जो उन्नति की थी। अतः नेपोलियन का विचार था कि सैन्य बल के द्वारा ही सब कुछ प्राप्त किया जा सकता है। उसने एक बार कहा था, "यदि मैं और अधिक यश व विजयें नहीं करूंगा तो मेरी सत्ता

समाप्त हो जाएगी। जो मैं हूँ वह मुझे विजयों ने ही बनाया है तथा विजयें ही मुझे इस स्थान पर बनाए रख सकती हैं।" नेपोलियन का विचार था कि उसका सम्मान व यश विजयों द्वारा ही सुरक्षित रह सकता है। उसका कहना था कि "ईश्वर महानतम् सेनाओं का साथ देता है" इस प्रकार नेपोलियन ने फ्रांस की राष्ट्रीय भावनाओं को सैन्यवाद में परिवर्तित कर दिया। नेपोलियन यह भूल गया कि सैन्यवादी नीति किसी एक सीमित उद्देश्य की पूर्ति के लिए उचित हो सकती है, किन्तु प्रत्येक अवसर पर सेना का प्रयोग करना उचित नहीं होता और न ही सैनिक शक्ति के द्वारा राज्य को अधिक दिनों तक सुरक्षित रखा जा सकता है। शीघ्र ही यह स्थिति उत्पन्न हो गयी। नेपोलियन की सैन्य आवश्यकताएँ इतनी अधिक बढ़ गयी जिनको पूरा करना कठिन हो गया। परिणामस्वरूप उसे अन्य देशों के सैनिक भी अपनी सेना में लेने पड़े जिसका परिणाम उसके हित में नहीं हुआ। नेपोलियन को सम्राट पद प्राप्त कर लेने के पश्चात अपना देश शान्ति के सिद्धांतों पर आधारित करना चाहिए था, परन्तु उसने ऐसा नहीं किया, अतः वह पतन की ओर अग्रसर हो गया।

5. नेपोलियन के सम्बन्धी – नेपोलियन का व्यवहार अपने सम्बन्धियों के प्रति अत्यन्त उदार था। उसने अपने सम्बन्धियों की अत्यधिक सहायता की तथा उच्च पद प्रदान किए। उसने अपने भाइयों लुई नेपोलियन जोसेफ, जेरोम को क्रमशः हॉलैण्ड, स्पेन व वेस्टफेलिया का शासक नियुक्त किया। किन्तु संकट के समय में किसी भी

सम्बन्धी ने उसकी सहायता नहीं की। नेपोलियन ने स्वंय भी इस बात को महसूस करते हुए मैटरनिख को लिखा था, "मैंने अपने सम्बन्धियों का जितना भला किया, उन्होंने उससे अधिक मेरा नुकसान किया"

6. पोप के साथ दुर्व्यवहार – प्रारम्भ में नेपोलियन के पोप के साथ सम्बन्ध ठीक थे, किन्तु महाद्वीपीय व्यवस्था के प्रश्न पर पोप व नेपोलियन के सम्बन्धों में कटुता आ गई। नेपोलियन ने अपनी शक्ति के मद में पोप को बन्दी बना लिया। नेपोलियन द्वारा पोप को बन्दी बनाना उसकी भारी भूल थी। रोज ने लिखा है "पोप के साथ दुर्व्यवहार करना नेपोलियन की भयंकर भूल थी" पोप को बन्दी बनाए जाने से सम्पूर्ण कैथोलिक वर्ग नेपोलियन के विरुद्ध हो गया जिसका भारी मूल्य नेपोलियन को चुकाना पड़ा।

7. महाद्वीपीय व्यवस्था – नेपोलियन ने इंग्लैण्ड को पराजित करने के लिए आर्थिक युद्ध का सहारा लिया इसी के अन्तर्गत नेपोलियन ने महाद्वीपीय व्यवस्था लागू करने की घोषणा की। नेपोलियन इंग्लैण्ड को व्यापारियों का देश कहता था। उसका विचार था कि यदि इंग्लैण्ड के व्यापार को बन्द कर दिया जाए तो इंग्लैण्ड आर्थिक रूप से टूट जाएगा तथा फ्रांस के समक्ष घुटने टेक देगा। नेपोलियन की योजना पूर्णतया असफल हो गई। इंग्लैण्ड यूरोप के प्रत्येक देश को आवश्यक वस्तुओं की कमी हो गयी तथा अन्य देशों पर दबाव डाला तो उनके पारस्परिक सम्बन्ध खराब होने लगे इससे नेपोलियन को अत्यधिक कठिनाई का सामना करना पड़ा। महाद्वीपीय व्यवस्था नेपोलियन के पतन का एक प्रमुख कारण थी। हेजन ने लिखा है, "अन्तत: इस नीति (महाद्वीपीय नीति) ने उसे अनिवार्य रूप से आक्रामक युद्धों की नीति में

उलझा दिया – जिसके परिणाम नाशकारी हुए और उसे भारी कीमत चुकानी पड़ी।

8\. स्पेन से युद्ध – नेपोलियन द्वारा स्पेन पर आक्रमण करना उसकी भारी भूल थी। इस युद्ध के कारण नेपोलियन को अत्यधिक हानि का सामना करना पड़ा। नेपोलियन के जीवन का यह सबसे लम्बा युद्ध था। नेपोलियन ने स्वयं इस युद्ध के विषय में कहा था, "स्पेनी नासूर ने मेरा विनाश कर दिया।"

9\. रूसी अभियान – स्पेन के अभियान के समान ही नेपोलियन का रूसी अभियान भी उसके लिए विनाशकारी प्रमाणित हुआ। यद्यपि 1807 ई० की टिलसिट की सन्धि से दोनों देशों के सम्बन्ध सुधर गए थे, किन्तु महाद्वीपीय व्यवस्था के कारण दोनों के सम्बन्ध पुन: खराब हो गया 1812 ई० में नेपोलियन ने 5 लाख सैनिकों के साथ रूस के लिए प्रस्थान किया व जब वह वापस फ्रांस पहुँचा तो मात्र 20 हजार सैनिक बचे थे। इन आंकड़ों से इस अभियान में नेपोलियन को कितनी क्षति हुई, अनुमान किया जा सकता है। इस अभियान ने नेपोलियन की शक्ति बहुत धक्का पहुँचाया तथा उसकी छवि को खराब किया। इस युद्ध ने फ्रांस की सेना की कमजोरियों को यूरोप के राष्ट्रों के समक्ष स्पष्ट कर दिया तथा वे भी अपनी स्वतन्त्रता का प्रयास करने लगे।

10\. राष्ट्रीयता की भावनाएं जागृत – नेपोलियन ने अपने अधीनस्थ राज्यों पर अत्यधिक अत्याचार किया तथा शोषण कर लगाए थे। उन राज्यों में नेपोलियन के विरुद्ध भावनाएं प्रबल हो रही थीं।

स्पेन व रूस के अभियानों में नेपोलियन की असफलता को देखकर इन राष्ट्रों में राष्ट्रीय भावना की लहर दौड़ गयी। प्रशा प्रतिशोध लेने के लिए व्याकुल हो रहा था। इटली में भी राष्ट्रवाद प्रबल हो रहा था। नेपोलियन इस राष्ट्रवाद का सामना न कर सका।

11. नेपोलियन का स्वभाव → नेपोलियन के पतन में उसके स्वभाव का भी प्रमुख हाथ था। नेपोलियन अत्यन्त हठी स्वभाव का व्यक्ति था तथा अपने विचारों के अतिरिक्त किसी की बात मानने को वह कदापि तैयार नहीं होता था इसी कारण तालीरा जैसे व्यक्तियों ने उसका साथ छोड़ दिया था। वह जानता था कि महाद्वीपीय व्यवस्था असम्भव थी, किन्तु फिर भी उसने उसे लागू किया। राइन संघ को भी वह स्वयं गलत मानता था, किन्तु फिर भी उसे बनाए रखा। नेपोलियन जानता था कि उसे इतने युद्ध नहीं करने चाहिए थे, किन्तु फिर भी उसने किए। नेपोलियन ने 1814 ई० में स्वयं इस बात स्वीकार करते हुए कहा था "मैं डरता हूँ इस तथ्य को स्वीकार करने से कि मैंने बहुत ज्यादा युद्ध किए हैं, मैं विश्व पर फ्रांस का प्रभुत्व स्थापित करना चाहता था। प्रो० मारखम ने लिखा है, "अपने कार्यों में वह दैवीय भूल कर रहा था।" नेपोलियन को मिली प्रारम्भिक सफलताओं से उसे घमण्ड भी हो गया था। इसी कारण आस्ट्रिया के प्रधानमंत्री मैटरनिख ने नेपोलियन से कहा था, कि "आपका पतन निश्चित है, यह मुझे लगा था, जब मैं यहाँ आया था, अब जबकि मैं जा रहा हूँ मुझे यह निश्चित हो गया है। 26 जून, 1813 ई० को मैटरनिख ने जब ड्रेस्डन में समझाने का प्रयास किया था तो नेपोलियन ने जवाब दिया, "क्या तुम यह चाहते हो कि मैं अपने आप को स्वयं ~~अपमानित~~ अपमानित

करूँ। मैं ऐसा कदापि नहीं करूंगा। मैं जानता हूँ कि कैसे मरा जाता है, किन्तु मैं एक इंच भी न दूंगा -- तुम एक सैनिक नहीं हो, अतः तुम्हें यह ज्ञात नहीं है कि एक सैनिक की आत्मा में क्या होता है। मैं बड़ा ही युद्ध क्षेत्र में हुआ हूँ, अतः मैं लाखों लोगों की जिन्दगी की परवाह नहीं करता।" इसी प्रकार अपने अहं के कारण उसने शत्रु को सदैव कमजोर समझा। उसने अपने सेनापति सॉल्ट से अंग्रेजी जनरल के विषय में कहा था, "वैलिंगटन एक अयोग्य जनरल है तथा होना स्वाभाविक ही था।

12. नेपोलियन की भूलें – नेपोलियन ने अपने राजनीतिक एवं सैन्य जीवन के दौरान अनेक भयंकर भूलें की जिनका परिणाम उसे भुगतना पड़ा। उसके द्वारा की गयी कुछ प्रमुख गलतियां निम्नवत् थीं –

(i) महाद्वीपीय व्यवस्था लागू करना।

(ii) महाद्वीपीय व्यवस्था के दौरान इंग्लैण्ड के लिए अनाज जाने देना।

(iii) स्पेन पर आक्रमण करना।

(iv) रूस के अभियान के दौरान मास्को में एक माह से अधिक समय तक रुके रहना।

(v) 4 जून, 1813 ई० को प्लेसविज का युद्ध विराम करना।

(vi) शत्रु सेना को कमजोर समझना।

(vii) वाटरलू के युद्ध के समय आक्रमण में देर करना।

नेपोलियन की उपरोक्त भूलें उसके पतन का प्रमुख कारण बनीं।

13. इंग्लैण्ड से दुश्मनी – यह नेपोलियन का दुर्भाग्य था कि उसका प्रमुख शत्रु इंग्लैण्ड था। इंग्लैण्ड अत्यन्त शक्तिशाली था तथा चारों ओर समुद्र से घिरा होने के कारण सुरक्षित था। इंग्लैण्ड की नौसेना

अत्यधिक शक्तिशाली थी, अतः फ्रांस तमाम प्रयत्नों के पश्चात् भी उसे परास्त करने में असफल रहा। इंग्लैण्ड ने राजनीतिक एवं कूटनीतिक श्रेष्ठता का परिचय देते हुए फ्रांस के विरुद्ध अन्य राष्ट्रों के साथ चार संगठन बनाए तथा अन्ततः वाटरलू के युद्ध में परास्त कर उसके राजनीतिक जीवन का अन्त कर दिया।

इस प्रकार उपरोक्त समस्त कारण प्रत्यक्ष अथवा अप्रत्यक्ष रूप से नेपोलियन के पतन के लिए उत्तरदायी थे। नेपोलियन ने जिन मूल्यों पर अपने साम्राज्य की नींव रखी थी वे मूल्य ही उसे ले डूबे। उसने युद्ध के द्वारा ही साम्राज्य का निर्माण किया था तथा युद्धों ने ही उसका पतन कर दिया। इसी कारण थामसन ने लिखा है, "जिन तत्वों ने नेपोलियन के साम्राज्य का निर्माण किया था उन्हीं तत्वों ने उसका विनाश भी कर दिया।" इसी कारण फिशर ने लिखा है, 'नेपोलियन के पतन के नाटक में तीन दृश्य मास्को, लिप्जिग तथा फाउण्टेनब्लू प्रमुख हैं। वाटरलू इस नाटक का उपसंहार है। यह कहना उचित ही है कि निरंकुश सत्ता पर राष्ट्रीयता भावना की विजय ही इस नाटक का मूल उद्देश्य है।"